M. A. (Previous) Examination, 2001

HINDI

Paper-III

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

Time: 3 Hours] [Maximum Marks: 100

अन्तिम प्रश्न करना अनिवार्य है
शेष में से किन्ही **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
सभी प्रश्नो के अंक समान है।

1. रासो काव्य परम्परा में पृथ्वीराज रासो कर स्थान निर्धारित कीजिए तथा उसका साहित्य मूल्यांकन प्रस्तुत कीजिए। **5+5+5**

अथवा

पद्मावती समय श्रृगग्रर और वीर रस एक दूसरे से पीछे नहीं रहे है- इस कथन की पुष्टि पठित अंश से सोदाहरण कीजिए।

2. कबीर द्वारा प्रकट जीव, जगत और माया संबंधी विचारों पर प्रकाश डालिए। **15**

अथवा

कबीर ने अपने समय में प्रचलित प्राय: सभी धार्मिक सम्प्रदायों के बाह्याचारों के खंडनात्मक दृष्टिकोण अपनाकर समाज सुधार की चेष्टा की है-इस युक्ति की सोदाहरण विवेचना कीजिए।

3. 'भ्रमरगीत सार' ाान की कोरी वचनावली और योग की थोथी साधनावली के स्थान पर प्रेम-योग का मंडन किया गया है- इस युक्ति का सोदाहरण प्रतिपादन कीजिए। **15**

अथवा

सूरदास में जितनी सहृदयता और भावुकता है, प्राय: उतनी ही चतुरता और वाग्विदग्धता भी है-इस कथन की पुष्टि गोपियों के भावों की अभिव्यक्ति के आधार पर कीजिए।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com

4. विनयपत्रिका की भक्तिभावाना को सोदाहरण उल्लेख करते हुए सूर के भ्रमरगीत की भक्ति भावना से तुलना कीजिए। **8+7**

अथवा

विनयपत्रिका के काव्य सौष्ठव पर प्रकाश डालिए।

5. रीतिकाल की स्वच्छंद या मुक्त धारा के कवि के रूप में बिहारी ने बंधे-बंधाए प्रेम प्रसंगों के भीतर ही जैसे सरस संदर्भो को ग्रहण किया है, वह इनकी प्रतिमा और उक्ति वैचित्र का द्योतक है-इस कथन की पुष्टि पठित अंश से कीजिए। **15**

अथवा

बिहारी का विप्रलंभ श्रृंगार पर अन्य प्रभावों का उल्लेख कीजिए तथा स्पष्ट कीजिए कि क्या बिहारी पर वे प्रभाव अधिक टिक सके है-अपने विचारों की पुष्टि के लिए पठितांश से उदाहरण दीजिए।

6. घनानंद का काव्य-सौष्ठव सोदाहरण कीजिए। **15**

अथवा

विरह-व्यंजना के निकष पर धनानंद का मुल्यांकन कीजिए ।

7. निम्नांकित पंद्याशें में से किन्हीं **चार** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। **10*4**

(क) सुनि गज्जनै आवाज, चढ़यौ साहाब दीन वर।
खुरासांन सुलतान, कास काबिलिय मीर घर।।
जंग जुरन जालिम जुझार, भुज सार भार भुअ।
धर धमंकि भजि सेस, गगन रवि लुप्पि रैन हुअ।।
उलटि प्रवाह मनौ सिंधु-सर, सक्कि राह अड्डौ रहीम।
तिहि घरी राज पृथिराज सौ, चंद बचन इहि विधि कहिय।।
सोधि जुगति कौ कंत, कियौ तब चित्त चहौ दिस।
लयौ विप्र गुरू बोल कही समुझाय वत्त तिस।।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com

नस नरिंद्र नरपती, बडे गढ़ द्रुग्ग असेसह।
सीलवंत कुल शुद्ध, देहु कन्या सु नरेसह।।
तब चलन देहुदुज्जह लगन सगुन बंद हिय अप्प तन।
आंनद उछाह समुदह सिखर, बजत नछ निशान घन।।

(ख) आयो घोष बड़ौ व्यौपारी।
लादि खेप गुन ज्ञान जोग की, ब्रज में आन उतारी।
फाटक दैकर हाटक माँगत, भोरे निपट सु धारी।
धुर तें ही खोटो खायो है, लये फिरत सिर भारी।।
इनके कहे कौन डहकावै, ऐसी कौन अजानी।
अपनौ दूध छाँडी को पीवै, खार कूप कौ पानी।।
ऊधौ जाहु सबार यहाँ त्तै, बेगि गहरू जनि लावौ।
मुंह माग्यौ पैहो सूरज प्रभु साहुहि आनि दिखावौ।।

अथवा

ऊधो । भली करी तुम आए।
ये बातें कहि-कहि या दुख में ब्रज के लोग हँसाए।।
कीन काज वृन्दावन कौ सुख दही भात की छाक।
अब वै कान्ह कूबरी राचे बने एक ही ताक।।
मोर मुकुट मुरली पीताम्बर पठवो सौज हमारी।
अपनी जटाजूट अरू मुद्रा लीर्न भसम अधारी।।
वै तो बड़े सखा तुम उनके तुमको सुगम अनीति।
सूर सबै मति भली स्याम की जमुना जल सौ प्रीति।।

(ग) जिहि घटि प्रीति न प्रेम रस फुनि रसना नहीं राम।
ते नर संसार में, उपजि खये बेकाम।।
पहलै बुरी कमइ करि, बांधी विष की पोट।
कोटि करम फिल पलक में आया हरि की वोट।।
रात्यूं रूनी बिरहनी, ज्यूं बंचौ कूं कुंज।
कबीर अंतर प्रजल्या, प्रगटया बिरहा पुंज।।
कर कामण सर साँधिकर, खंचि जु मारया माहि ।
भीम र भिट्टया सुमार हुवै, जीवै की जीवै नांहि ।।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com

अथवा

संतो भाई, आई ग्यांन की आंधी रे।
भ्रम की टाटी सभै उड़ानी माया रहे न बांधी रे।।
दुचित्ते की दोइ थूनि गिरानी, मोह बलैडा टूटा।
त्रिसना छानि परी घर ऊपरि दरमति भांडा फूटा।।
आंधी पाछै जो जल बरसा तिहि तेरा जन भींना।
कहै कबीर मनि भया प्रगासा, उद्रेमानु जब चींना ।।
कर के मीड़े कुसुम लौ गई विरह कुम्हिलाय।
सदा समीपिनि सखिनंहू नीठि पिछानी जाय।।
कर समेटि कच भूज उलटि खएं सीस पट टारि।
काकौ मन बांधै न यह जूरौ बाँधनिहारि।।
खेलन सिखए अलि भले चतुर अहेरीमार।
काननचारी नैन मृग, नागर नररि सिकार।।
गिरि तें ऊंचै रसिक मन बूढे जहां हजार।
बहै सदा पसु नरन कौ प्रेम पयोधि पगार।।
जोग जुगति सिखए सबै मनौ महामुनि मैन।
चााहत प्रिय अद्वैतता, कानन सेवत नैन।।
चटक न छाँड़त घटतहु, सज्जन नेह गंभीर।
फीकी परै न बरू फटै रंग्यो चोल रेग चीर।।
छकि रसाल सौरभ सनै मधुर माधवी गंध।
ठौर ठौर झूमत झँपन भौर झौर मधु अंध।।
चमचमात चंचल नयन बिच घूँघट पर झीन।
मानहु सुर सरिता विमल जल उछरत जगु मीन।।

(ड.) रघुपति विपत्ति दवन।
परम कृपालु, प्रनत प्रतिपालक पतित पावन।।
क्रूर कुटिल कुलहीन दीन अति मलिन जवन।
सुमरित नाम राम पाए सब अपने भवन।।
गज पिंगला अजामिल से खल गुने धौ कवन।
तुलसीदास प्रभु केहि न दीन्हि गति जान की रवन।।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com

अथवा

मनपछितैहें अवसर बीते।
दुर्लभ देह पाई हरिपद मन वचन असही ते।।
सहसबाहु दसबदन आदि नृप बचे न कहत बली ते।
हमहम करि धन धाम सँवारे अंत चले उठि रीते।।
सुत बनितादि जानि स्वारथ सन करू नेह सब ही ते।
अंतहु तोही तजैगे पामर! तू न तनै अब ही ते।।
अब नाथति मनुरागु जागु जड़ त्यागु दुरासा जीते।
बुझै न काम अशिनि तुलसी कहु विषयभोग बहु धीते।।

(च) घन आंनद जीवन मूल सुजान की
कौंध कहू न कहूं दरसे।
सुनि जानिये धौ कित छाय रहे
द्दग चातिर प्रान तपेतरसे।।
बिन पावस तौ इन ध्यास होन,
सुक्यों करि अब सों परसे।
बदरा बरसै रित में धिरि कै नितही
अँखियाँ उघरी बरसै।।

अथवा

अतिसूधौ समेह कौ मारग है
जहां नैकु सयानप कांक नहीं।
तहॉ साँचै चलै तीज आपुनपौ ।
झझकै कपटी जे निसोक नहीं।।
घन आंनद प्यारे सुजान सुनी
इत एक तें दूसरो आंक नहीं।
तुम कौन सी पाटी पढ़ै हो लला
मन लेहु पै देहु छटांक नहीं।।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com